

\Hindi

Shrirama Samarthya Nirupanam

श्रीरामसामर्थ्यनिरुपणम्

Document Information

Text title : shrIhanumatproktaM shrIrAmasAmarthyayanirUpaNam

File name : shrIrAmasAmarthyayanirUpaNam.itx

Category : raama, rAma, stotra

Location : doc_raama

Author : Hanuman

Transliterated by : Mrityunjay Pandey

Proofread by : Mrityunjay Pandey

Description-comments : Valmiki Ramayana Sundarakanda Adhyaya 51/31,38-44

Latest update : November 3, 2025

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

Please help to maintain respect for volunteer spirit.

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

November 5, 2025

sanskritdocuments.org

Shrirama Samarthya Nirupanam

श्रीरामसामर्थ्यनिरूपणम्



श्रीहनुमानोवाच -

कामं भल्वलमप्येकः सवाञ्जिरथकुञ्जराम् ।

लङ्कां नाशयितुं शक्तस्तस्यैष तु न निश्चयः ॥ ३१ ॥

हनुमान्जो रावण से कहते हैं - “निरसनैल मैं अकेला ही, घोडों, रथों और ढाथियों से युक्त पूरी लङ्का का विनाश करने में समर्थ हूँ: किन्तु यल (ऐसा करना) मेरे स्वामी भगवान श्रीराम का आदेश नहीं है ।”

सत्यं राक्षसराजेत्र शृणुष्व वचनं मम ।

रामदासस्य दूतस्य वानरस्य विशेषतः ॥ ३ॢ ॥

“हे राक्षसराज रावण! मेरे वचनों को सत्य समझकर ध्यानपूर्वक सुनो - मैं भगवान श्रीराम का दास, उनका दूत और विशेष रूप से वानर हूँ ।”

सर्वाल्लोकान् सुसंलृत्य सभूतान् सचराचरान् ।

पुनरेव तथा अष्टुं शक्तो रामो मलायशाः ॥ ३ॢ ॥

अर्थ: “मलायशस्वी भगवान श्रीराम सम्पूर्ण लोकों को, सभी चराचर (चल-अचल) प्राणियों सहित, यदि चाहें तो संडार कर सकते हैं - और वैसे ही पुनः उनकी सृष्टि करने में भी समर्थ हैं ।”

देवासुरनरेन्द्रेषु यक्षरक्षोरगेषु च ।

विधाधरेषु नागेषु गन्धर्वेषु मृगेषु च ॥ ३ॢ ॥

अर्थ: “देवताओं में, असुरों और नरेशों में, यक्षों, राक्षसों, सर्पों में, विधाधरों, नागों, गंधर्वों तथा मृगों (पशुओं) में भी ।”

सिद्धेषु किन्नरेन्द्रेषु पतत्रिषु च सर्वतः ।

सर्वत्र सर्वभूतेषु सर्वकालेषु नास्ति सः ॥ ३१ ॥

यो रामं प्रतियुध्येत विष्णुतुल्यपराङ्ममम् ।

अर्थ: “सिद्धों में, किन्नरों के श्रेष्ठों में, पक्षियों में और सब ओर - समस्त प्राणियों में, सभी डालों (भूत, भविष्य एवं वर्तमान) में भी कोई नहीं है । जो भगवान श्रीरामसे, जो विष्णु के समान पराक्रमी हैं, युद्ध करने का साहस करे।”

सर्वलोकेश्वरस्येह कृत्वा विप्रियमीदृशम् ।
रामस्य राजसिंहस्य दुर्लभं तव जिवितम् ॥ ४२ ॥

अर्थ: हे रावण! “तूने समस्त लोकों के ईश्वर, राजाओं में सिंह, भगवान श्रीराम के प्रति औसा अप्रिय कार्य किया है, उसके विषे अब इस संसार में तेरा जिवित रहना दुर्लभ है ।”

देवाश्च दैत्याश्च निशाचरेन्द्र गन्धर्वविद्याधरनागयक्षाः ।
रामस्य लोकत्रयनायकस्य स्थातुं न शक्ताः समरेषु सर्वे ॥ ४३ ॥

अर्थ: “हे राक्षसों के राजा! देवता, दैत्य, गन्धर्व, विद्याधर, नाग और यक्ष - इन सबमें से कोई भी भगवान श्रीराम, जो तीनों लोकों के नायक हैं, उनके सामने युद्ध में हलरने की शक्ति नहीं रखता ।”

ब्रह्मा स्वयम्भूश्चतुराननो वा रुद्रस्त्रिनेत्रस्त्रिपुरान्तको वा ।
छन्दो महेन्द्रः सुरनायको वा स्थातुं न शक्ता युधि राघवस्य ॥ ४४ ॥

अर्थ: “स्वयंभू चारमुण ब्रह्मा ढों या त्रिनेत्र, त्रिपुरासुर का संहार करने वाले रुद्र (शिव), अथवा मडान औश्वर्यशाली देवताओं के राजा छन्द - ये सभी भी युद्ध में भगवान श्रीराघव के सामने हलरने में समर्थ नहीं हैं ।”

एति हनुमानप्रोक्तं श्रीरामसामर्थ्यनिरूपणं सम्पूर्णात् ।

- वाल्मीकि रामायण सुन्दरकाण्ड अध्याय ५१ । ३१,३८-४४

- vAlmIki rAmAyaNa sundarakANDa adhyAya 51 . 31,38-44

Notes:

In the 51st chapter of Sundarakand of Valmiki Ramayana, this is a part of the dialogue between Lord Hanuman and Ravana in which Lord Hanuman describes the capabilities of Lord Shri Rama.

In the first chapter of Balakanda of Valmiki Ramayana, there is a dialogue between Narada and Valmiki - in which Valmiki asks questions to Narada.

Bāla-kāṇḍa 1.1.3

याश्चिरेण य को युक्तः सर्वभूतेषु को हितः ।

विद्भान्ः कः समर्थश्च कश्चैकप्रियदर्शनः ॥

(Translation by M N Dutt) Who is qualified by virtue of his character, and who is engaged in the welfare of all creatures? Who is learned and capable? Who alone is ever lovely to behold?

It appears that Lord Hanuman is expounding on the quality of Lord Rama in this description.

Encoded and proofread by Mrityunjay Pandey

——
Shrirama Samarthy Nirupanam
pdf was typeset on November 5, 2025

——
Please send corrections to sanskrit@cheerful.com

